गुरुपूर्णिमा के अवसर पर बाल गायकों रत्नेश और पद्मेश दुबे अपने गुरु के साथ।

गज़ल गायकी में भाइयों ने गुरु से बंधाया गंडा

सिटी रिपोर्टर

नगर के दो बाल गायकों रत्नेश और पद्मेश दुबे ने गुरु पूर्णिमा के दिन अपने गुरु अश्विनी वर्मा से गंडा बंधवाया। गुरु-शिष्य परंपरा में यह संभवतया पहला अवसर है, जब रागदारी तथा लय की गजल गायकी में इन दोनों भाइयों ने अपने गुरु से इसे सीखने का संकल्प लिया है।

दोनों भाइयों का रुझान बचपन से गजल गायकी में रहा है। दोनों ने प्रख्यात गजल गायक अहमद हुसैन-मोहम्मद हुसैन के साथ कोरबा के मंच पर प्रस्तुति दी है। होलीक्रॉस स्कूल में रत्नेश 9वीं तथा पद्मेश 7वीं का छात्र है। घर पर संगीत का माहौल उन्हें बचपन से ही मिला है। महेश दुबे के इन दोनों होनहार पुत्रों के चाचा सोहन दुबे खुद एक नामचीन तबला वादक हैं। उन्होंने बताया कि इन दोनों बालकों को गजल गायकी में सामाजिक संस्कारों के साथ जुड़कर देखना उन्हें बेहद सुकून दे रहा है। उनके गुरु भिलाई के अश्विनी वर्मा ए ग्रेड कलाकार हैं। पिता स्व. रतनचंद्र वर्मा की अविभाजित पंजाब की शैली 'शाम चौरासी' को आत्मसात कर अश्विनी ने गजल गायकी को रागदारी में बेहद सलीके से संजोया है। अपनी शैली में गजल गाने वालों में देश के चुनिंदा गायकों में अश्विनी एक हैं। उनकी विशेषता यह भी है कि वे अपनी बंदिशे खुद तैयार करते हैं। आज के व्यावसायिक दौर में रागदारी की गजलों की इस तरह की शिक्षा-दीक्षा और गंडा बंधवाने का यह रिवाज अनूठा है। यह बात अलग है कि इसे कम ही लोग अपनाते हैं।

दैनिक भास्कर 08/जुलाई/2009